International Journal of Humanities and Social Science Invention (IJHSSI)
ISSN (Online): 2319 – 7722, ISSN (Print): 2319 – 7714
www.ijhssi.org ||Volume 9 Issue 3 Ser. I || Mar. 2020 || PP 75-81

दिल्ली के समकालीन वस्तुसापेक्ष कलाकार : निरेन सेनगुप्ता

डॉ हेमन्त कुमार राय
एसोसीएट प्रोफेसर
चित्रकला विभाग
एम0 एम0 एच0 कॉलेज)
गाज़ियाबाद

शोधार्थी
रिचा सिंह
एम0 एफ0 ए0
बी0 एड0

सारांश

निरेन सेनगुप्ता की समकालीन कला जगत में महत्वपूर्ण भूमिका है। निरेन वर्तमान में सबसे अग्रणी कलाकारों में से एक हैं। निरेन व्यवहार में अंतर्मुखी होने के नाते अपनी कला के प्रचार के प्रति उदासीन रहते हैं। पिछले कई दशक से उनकी कलाकृति जीवन जीने का माध्यम रही है। उन्होंने अपनी निजी शैली में कार्य किया है। उनकी शैली 'गगन ठाकुर' शैली से प्रभावित है। निरेन सेन के चित्रों के विषय अध्यात्मिक तत्व से प्रेरित हैं।उनके चित्रों को देखकर ऐसा प्रतीत होता है जैसे उन्होंने अपने सभी चित्रों में ज्यामितीयआकारों का प्रयोग किया है जिन में घनवादी प्रभाव प्रतीत होता है। उन्होंने सूचना तकनीकी के साथ मिलकर समकालीन कला को और गतिबद्ध किया है। साथ ही स्थानीय, क्षेत्रीय व अंतर्राष्ट्रीय चेतनाओं को माध्यम के रूप में उपयोग कर आधुनिक कला के नये रूप को चित्रित किया है। निरेन सृजनात्मक रूप से समकालीन कला के अध्यात्मिकता की भावना को दर्शाते हैं। इस भावना के द्वारा वह निराशा को आशा तथा विचारों के अर्न्तद्वन्द की आक्रमणता के विकसित रूप को परिलक्षित करते हैं। इन्होंने अपनी कलाकृतियों में केसरी रंग का प्रयोग प्रमुख रंग के रूप में किया है। उनका मानना है केसरी रंग अध्यात्म व बलिदान का प्रतीक होता है। निरेन ने प्रयोग और अविष्कार की कल्पना को यथार्थ रूप देकर समकालीन कला जगत में वैज्ञानिक प्रवृत्ति की सोच को उजागर किया है। निरेन की कला में आकृतिमूलक बिम्बों और अमूर्त रुप दोंनो ही कला के तत्व देखने को मिलते हैं।

अगर हम निरेन सेन के चित्रों के विषय के बारे में बात करते हैं, तो निरेन ने अपने चित्रों के माध्यम से अपने परिवेश को दिखाने का प्रयास किया है। निरेन ने अपने चित्रों के लिए प्रेरणा माँ व प्रकृति से प्राप्त की है। निरेन अपने आसपास के लोगों पर ध्यान केंद्रित करते हैं और अपनी अगली पेंटिंग उससे सम्बंधित कर देते हैं। निरेन ने 'एंजेल', 'टच 'वर्ल्ड ऑफ स्पेस', 'राजकुमारी', 'राजकुमार और राजकुमारी', 'लोटस के साथ राजकुमारी', 'लिली के साथ राजकुमारी', 'उत्सव', 'शिवपुरी गर्ल', 'युगल', 'मोक्ष', 'पुरुषोत्तम', 'शरण', 'भगीरथ', 'भिक्षु', 'अमृत के साथ मोक्ष', आदि चित्र श्रृंखलाओं को चित्रित किया है।

मुख्य शब्दःनिरेन सेनगुप्ता, आकृतिमूलक कला, वस्तुसापेक्ष कला,एंजेल, समकालीन कला।

दिल्ली के समकालीन वस्तुसापेक्ष कलाकार : निरेन सेनगुप्ता

प्रस्तावना

निरेन सेन गुप्ता का जन्म 15 जनवरी, 1940 को पूर्वी बंगाल (अब बांग्लादेश में) के म्यामांसिंह जिले के जमालपुर में हुआ था।(1) वह कॉलेज ऑफ आर्ट, नई दिल्ली के पूर्व प्राचार्य रहे हैं। उन्होंने विभिन्न कला संस्थानों में स्नातक और स्नातकोत्तर स्तर पर 30 वर्षों तक पढ़ाया है। वह कलकत्ता विश्वविद्यालय से विज्ञान में स्नातक हैं और उन्होंने कलकत्ता के सरकारी कला और शिल्प के कॉलेज से कला में भी स्नातक डिग्री हासिल की। निरेन सेन गुप्ता कोलकाता में 'गैलरी 26' के संस्थापक सदस्य भी हैं। इसके अलावा वह अकादमी ऑफ विजुअल मीडिया, नई दिल्ली के कार्यकारी सदस्य भी हैं।(2)निरेन सेन गुप्ता अनेक एकल और सामूहिक प्रदर्शनियों में भागीदारी कर चुके हैं और इन्हें विभिन्न सम्मानों से अलंकृत किया जा चुका है।

निरेन सेन गुप्ता के चित्रों को देखकर ऐसा प्रतीत होता है जैसे उन्होंने अपने सभी चित्रों में ज्यामितीयआकारों का प्रयोग किया है जिन में घनवादी प्रभाव प्रतीत होता है।निरेन सेन गुप्ता का प्रिय माध्यम 'ऑयल' रहा है, उनका अधिकतर कार्य कैनवस पर 'ऑयल' रंगो द्वारा किया गया है। उनकी मुख्य रंगत, केसरिया रंग रही है। उन्होंने अपने चित्रों में केसरिया रंग का प्रयोग अधिक मात्रा में किया है। वह इस रंग को पवित्र व शुद्ध मानते हैं। इनके चित्रों की रंग योजना अद्भुत है।निरेन अपनी स्मृतियों को कल्पना का रूप देते हैं।निरेन ने अपने चित्रों में घास की तरह की तकनीक का प्रयोग किया है। इस तकनीक में वह घास की तरह ब्रश के स्ट्रोक को प्रभावी ढंग से इस्तेमाल करते हैं। निरेन इस तकनीक का प्रयोग खाली स्थान पर करते हैं, जो यूरोपियन बिंदूवादी चित्रों से भिन्न है।

निरेन सेन के चित्रों के विषय आध्यात्मिक तत्व से प्रेरित हैं। उन्होंने सूचना तकनीकी के साथ मिलकर समकालीन कला को और गतिबद्ध किया है, साथ ही स्थानीय, क्षेत्रीय व अंतर्राष्ट्रीय चेतनाओं को माध्यम के रूप में उपयोग कर आधुनिक कला के नए रूप को चित्रित किया है। निरेन ने नई दिशाओं का नए रूप में उपयोग कर, प्रकृति

के जैवकीय संकेतों को चित्रित किया है।निरेन सृजनात्मक रूप से समकालीन कला में 'आध्यात्मिक' की भावना को दर्शाते हैं जिसके द्वारा वे निराशा को आशा, तथा विचारों के अंतरद्वंद की आक्रमणता के विकसित रूप को परिलक्षित करते हैं। इन्होंने अपनी कलाकृतियों में केसरी रंग का प्रयोग प्रमुख रंग के रूप में किया है। उनका मानना है, केसरी रंग आध्यात्म व बलिदान का प्रतीक होता है। निरेन ने प्रयोग और अविष्कार की कल्पना को यथार्थ रूप देकर समकालीन कला जगत में वैज्ञानिक प्रवृति की सोच को उजागर किया है। निरेन की कला में आकृतिमूलक बिम्बोंऔर अमूर्त रूप दोनों की कला के तत्व देखने को मिलते हैं।

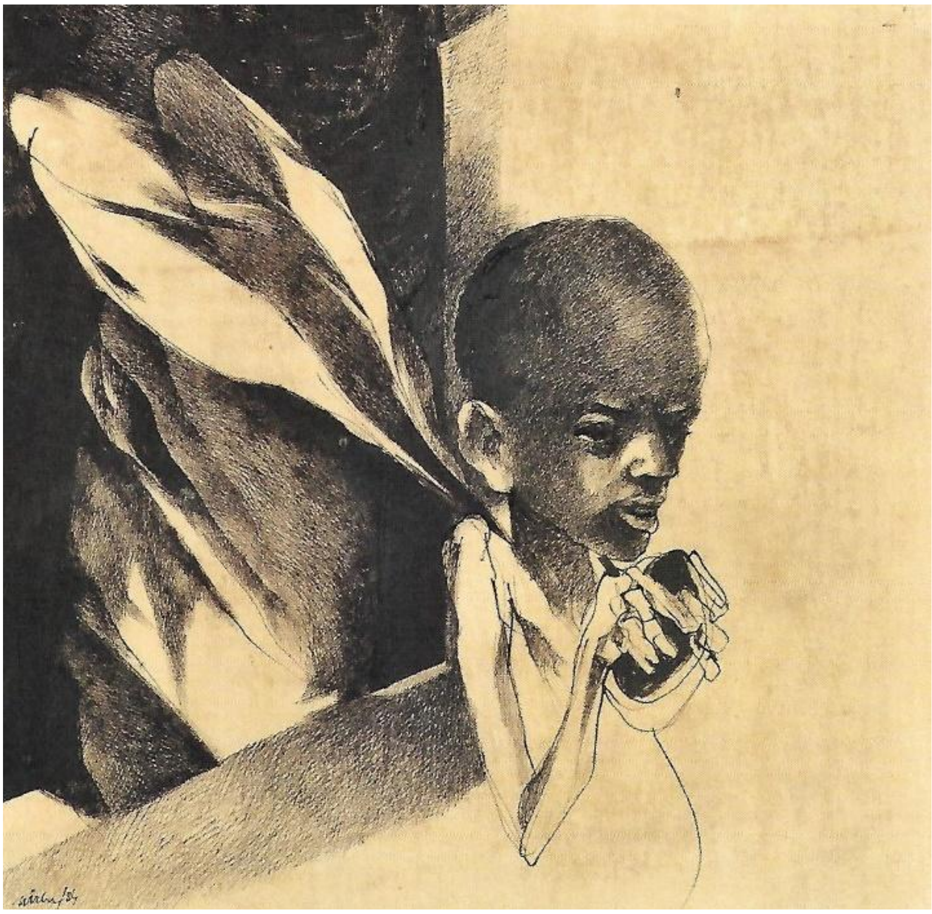

एंजेलI, पेन एण्ड इंक, 24" X 24",1984

निरेन की प्रारंभिक प्रेरणा का पहला चरण साठ के दशक के दौरान आया जब वह कलकत्ता कॉलेज से पास आउट हुए थे। कॉलेज के आखिरी दिनों में निरेन रेलवे स्टेशन पर स्केचिंग के लिए जाया करते थे। बांग्लादेश के कई शरणार्थी कलकत्ता और बांग्लादेश के बीच स्थित सियालदाह के रेलवे स्टेशन पर ठहरे थे। उन दिनों के दौरान, उन्होंने उस स्टेशन पर अत्यधिक गरीबी में रह रहे बांग्लादेश के शरणार्थियों को देखा, इन शरणार्थियों के साथ निरेन का भावात्मक जुड़ाव हो गया था क्योंकि यह उन्हें उनके अतीत की याद दिलाते थे। जैसे निरेन कहते हैं, "यहाँ तक कि मैं खुद भी एक शरणार्थी था।'"कॉलेज से पास आउट होने के बाद, वह गरीबी से जूझ रहे लोग अब भी मेरे दिमाग में थे, उनके भूखे चेहरे देवदूतों की तरह खूबसूरत थे। गरीब बच्चों के चेहरों ने उनके विनम्र दिल को छू लिया और उन्हें प्रोत्साहित किया कि वे अपने चित्रों के माध्यम से समाज को इन लोगों के दर्द को दिखाने के लिए मध्यस्थ बनें। इसी से प्रेरणा पाकर उन्होंने कलम और स्याही से 'एंजेल' नाम की एक सुंदर श्रृंखला बनाई। इस श्रृंखला में छोटे बच्चों के चेहरे पर गरीबी के दर्द को पंखों वाले स्वर्गदूतों के रूप में दिखाया गया है।

टच II,मिक्स्ड मीडिया,48" X 24", 1977

निरेन ने 'टच' सीरीज को कोलाज माध्यम द्वारा चित्रित किया है, जिसमें वह यह दिखाना चाहते थे कि जिंदगी कई चीजों में बंटी हुई है। इस विभाजन को दर्शाने के लिए उन्होंने इन चित्रों को बहु–माध्यम कोलाजों में किया है। उन्होंने इन कोलाजों को उसी चरण के दौरान चित्रित किया है, जब वह एंजेल श्रृंखला को चित्रित कर रहे थे। इन कोलाजों द्वारा मानव प्रेम के प्रति मोह का भाव दर्शाया गया है। यह एक प्रतीकात्मक श्रृंखला है। वह अपने आसपास के लोगों को बहुत प्रतीकात्मक रूपों में देखते हैं। यहाँ कलाकार यह दिखाना चाहता है कि शुद्ध जीवन को कई भागों में विभाजित किया गया है, इसलिए श्रंखला के विभिन्न तत्वों में एक कोलाज का निर्माण किया गया है। लेकिन उनका काम पूरी तरह से अलग है, क्योंकि उन्होंने अपने कोलाज के काम में रंग भी दिए हैं।

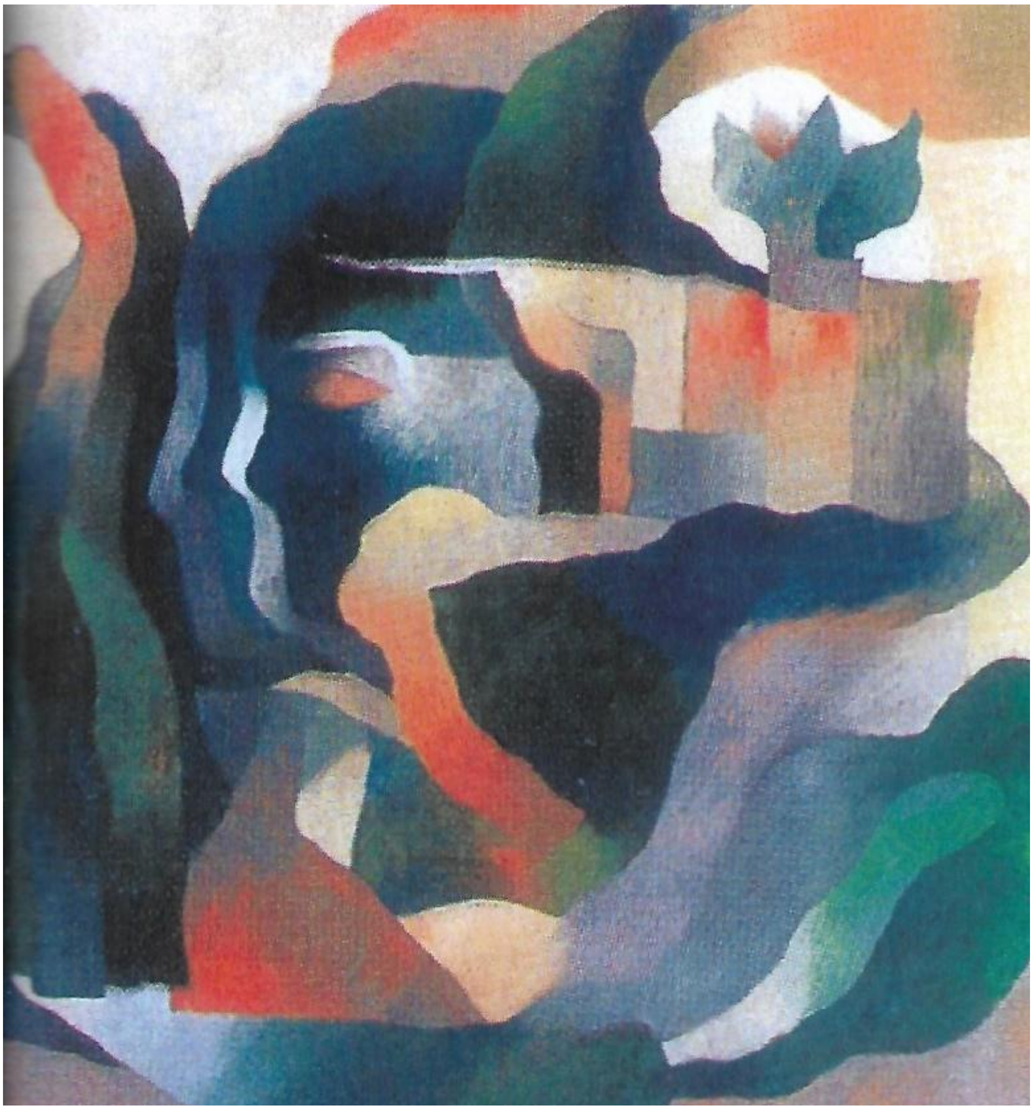

वर्ल्ड ऑफ स्पेस III, ऑयल ऑन कैनवास, 3′ X 3′

'वर्ल्ड ऑफ स्पेस' सीरीज में निरेन ने पाँच चित्रों को चित्रित किया है। इस श्रृंखला को चित्रित करने से पूर्व निरेन अक्सर दिल्ली के पास अरावली रेंज के रिज क्षेत्र का दौरा करते थे। वहीं पर उन्हें एक चट्टान मिली, जो सबसे काफी अलग थी। उस चट्टान से निरेन काफी मोहित हो गए थे क्योंकि वह उन्हें एक प्राचीन रानी के चेहरे की तरह लगती थी। उन्हें ऐसा प्रतीत होता था कि आज भी रानी का साम्राज्य वहीं है और रानी अपने राज्य की देखभाल कर रही है। जब बाद में उन्होंने 'वर्ल्ड ऑफ स्पेस' क्वीनको चित्रित किया तो उनके दिमाग में यही चट्टान थी। उन्होंने रानी चित्रित करने के लिए नीला व काला और हरे हल्के रंग के साथ केसरिया रंग का उपयोग किया।

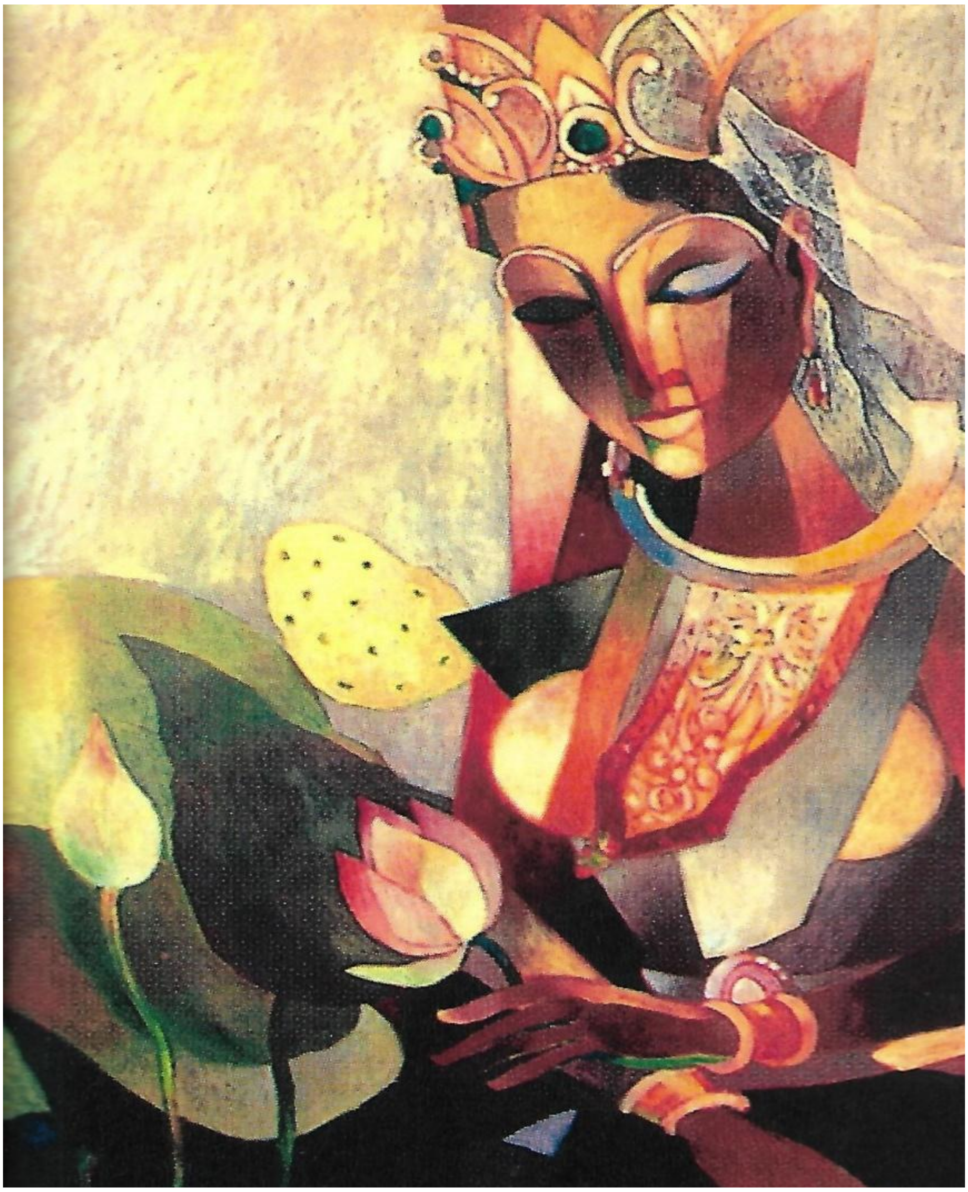

प्रिंसेस II, ऑयल ऑन कैनवास, 4′ X 3′

निरेन की आकृतिमूलक कार्यों में नए सिरे से दिलचस्पी 'राजकुमारी' या 'प्रिंसेस' श्रृंखला के साथ शुरू हुई, जिसकी प्रेरणा उन्होंने भारतीय महिलाओं की आंतरिक शक्ति से ली थी। निरेन कहते हैं, "मैंने दुनिया भर के बहुत से देशों का दौरा किया और मुझे भारतीय महिलाओं और उनके परिवार और काम के प्रति उनके योगदान के बारे में एहसास हुआ। इसलिए मैंने राजकुमारी श्रृंखला को चित्रित किया जो शक्तिशाली भारतीय महिलाओं का प्रतिनिधित्व करती है।"(3)

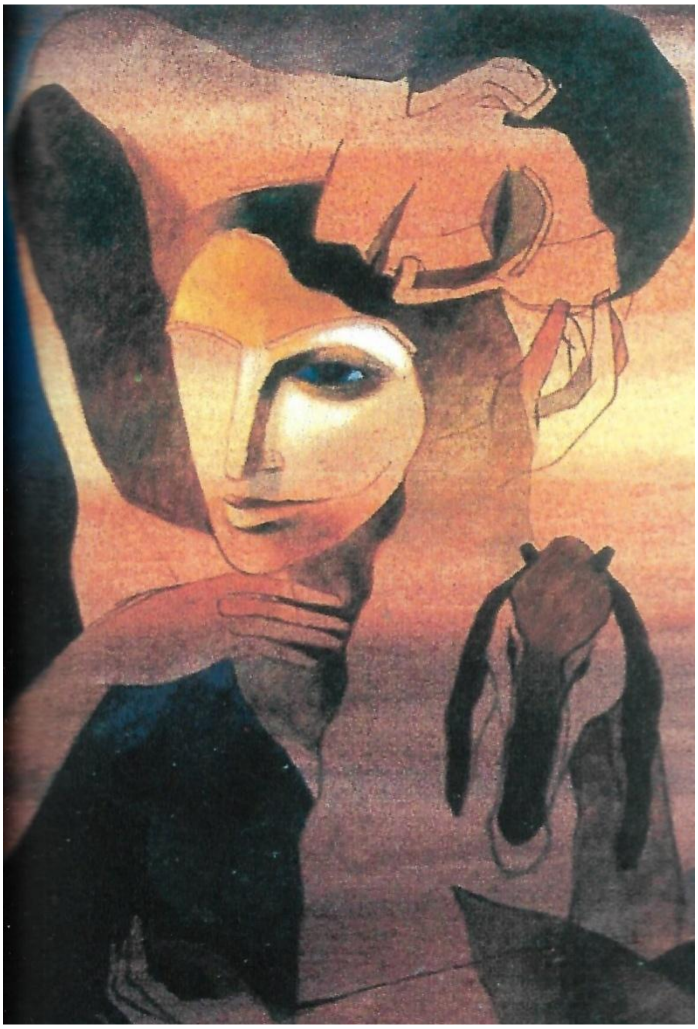

युगल (Couple) V ,ऑयल ऑन कैनवास, 2.5′ X 2′

निरेन ने 'युगल' श्रृंखला को 1999–2000 में चित्रित किया था। यह श्रृंखला उनके बेटे की शादी से प्रेरित है। ये वह पेंटिंग है जो निरेन ने अपने बेटे की शादी के बाद की थी। इस श्रृंखला में उन्होंने छः चित्रों को चित्रित किया है। इन में से एक पेंटिंग उन्होंने अपने बेटा और बहू को उपहार में दी। इस श्रृंखला में नव विवाहित पुरुष और महिला के संबंध का चित्रण किया गया है। सभी चित्रों में एक बकरी दर्शायी गई है, जो उस दंपति का प्रतीक है, जो घरेलू जीवन का नेतृत्व करते हैं। एक पेंटिंग में साधु की तरह दिखने वाले बच्चे को कमल पकड़े हुए दिखाया गया है, क्योंकि यह प्यार के शुद्धतम रूपों में से एक है। जब एक युगल बच्चे की चाह के लिए अपने रिश्ते को आगे ले जाता है तो इसके साथ ही बच्चे के प्रति प्रेम का शुद्धतम रूप प्रदर्शित होता है।

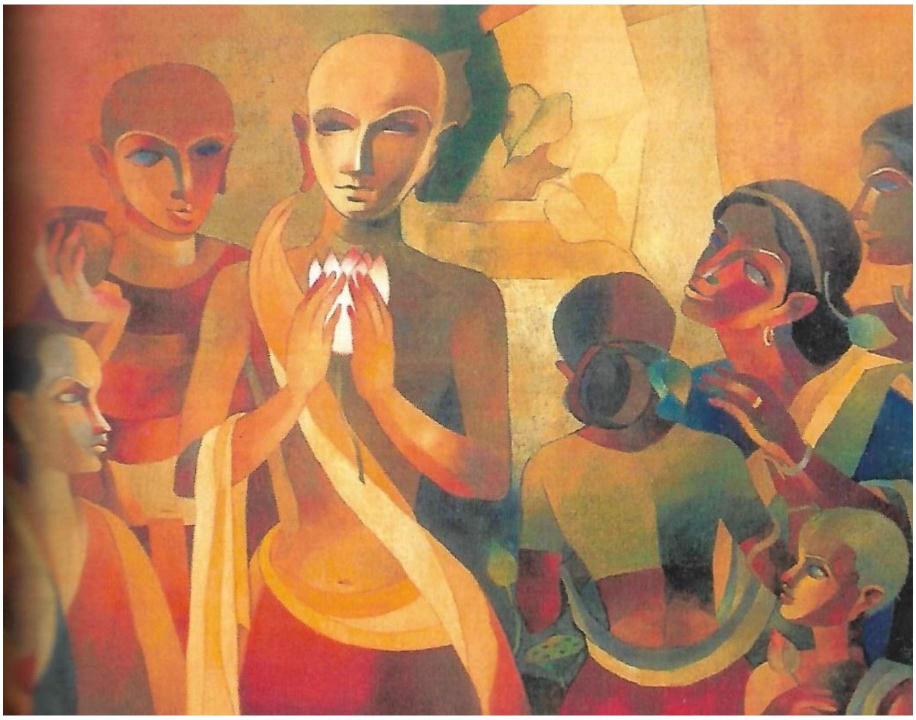

मोक्ष III, ऑयल ऑन कैनवास,4' X 5'

निरेन सेन के रामकृष्ण मिशन के साथ लंबे जुड़ाव ने उनकी खोज को उचित दिशा दी। मिशन के भिक्षुओं के जीवन का उनके विचारों और कला पर एक प्रेरणादायक प्रभाव पड़ा। इस प्रकार इस चरण में उन्होंने 'मोक्ष' पर एक श्रृंखला चित्रित की जिसमें मानव जाति के लिए बलिदान, करुणा और निस्वार्थ सेवा को दर्शाया गया है। निरेन ने 'मोक्ष' श्रृंखला के अंतर्गत 12 चित्रों को चित्रित किया है। इस श्रृंखला में भिक्षुओं को ज्यादातर 'बुद्ध' के रूप में दर्शाया गया है, जिनके लंबे कान और अंडाकार चेहरे हैं। कहीं–कहीं कमल और अन्य स्थानों पर पत्ती, बर्तन या जानवर, भीख का कटोरा, व अर्द्धचन्द्राकार चंद्रमा और किरणों को भी दर्शाया गया है।

समकालीन भारतीय कला में निरेन सेन गुप्ताआज एक वरिष्ठ एवं महत्वपूर्ण कलाकार हैं, जिन्होंने परंपरा को समकालीन अर्थवत्ता देने का प्रयास किया है।आज निरेन सबसे अग्रणी चित्रकारों में से एक हैं। पिछले तीन दशकों से, पेंटिंग उनके विचार और जीवन जीने का माध्यम रही है, लेकिन अंतर्मुखी होने के नाते वह प्रचार के प्रति उदासीन हैं। निरेन कला का उपयोग दिव्य ऊर्जा के कभी न खत्म होने वाले चिंतन के रूप में करते हैं।[(4)]उनके चित्रों में सूक्ष्म धनवाद का स्पर्श, बंगाल के एक प्रसिद्ध कलाकार, गगन्द्रेनाथ टैगोर के काम से प्रभावित है। निरेनकी कलापाब्लो पिकासो के क्यूबिज्म के विचार से भी प्रभावित है।

संदर्भ सूची

[1]. http://www.majorto.com/
[2]. https://www.pinterest.com/artslant/
[3]. Saswati]An Interview with Prof. Niren Sengupta
[4]. Chauhan] B. S.] Painting his way towards spiritualism
[5]. https://www.artsy.net/
[6]. Exhibition Brochure] 'Niren' 1985 by Keshav Malik
[7]. Iyer] Vasantha] "Principles of Arts" written for Art and Artist
[8]. www.artintaglio.in